Dr. Madan Paswan, History | Lecture No. 17
Class: B.A. Part - II (H). P. IIIrd. | Date: 10.11.2020
Topic: Unit - II (a) Balban. | Continue Lecture ....

बलबन का यह उद्देश्य था कि इस प्रकार के प्रदर्शन से जनसाधारण के मन में 'भय तथा आतंक' उत्पन्न किया जाए, जिससे राजत्व की प्रतिष्ठा में वृद्धि हो।

सुल्तानों की उपाधियाँ

सुल्तान	उपाधि
कुतुबुद्दीन ऐबक	— लाखबख्श।
बलबन	— उलगू खाँ (प्रधान खान)।
अलाउद्दीन खिलजी	— यामिन-उल-खिलाफत-नासिरी अमीर-उल-मुमिनिन, जनता का चरवाहा।
कुतुबुद्दीन मुबारक	— अल इमाम-उल इमाम, खिलाफी खिलाफत उल्लाह।
इल्तुतमिश नासिरुद्दीन	— नासिर अमीर उल मोमिन।
खुसरवशाह	— पैगम्बर के सेनापति।

बलबन के राजत्व सिद्धान्त की एक विशेषता यह थी कि इसमें जनता के कल्याण पर बल दिया गया। उसके अनुसार अगर राजा जनहित की ओर ध्यान न देकर राजा के पद तथा प्रतिष्ठा को आघात पहुँचायेगा तो उसे अपने शासनकाल में किए गए दुष्कर्मों और अपराधों के लिए अंतिम फैसले के दिन दण्ड भोगना पड़ेगा।

बलबन राजत्व को एक विरासत मानता था और विरासत में प्राप्त होने वाला राजत्व ही वास्तविक तथा औचित्यपूर्ण था। उसके अनुसार यदि इस प्रकार का राजत्व क्रूर और अत्याचारी हो तब भी जनता उसको स्वीकार करेगी और उसके नियमों का पालन

करेगी। परन्तु जो राजत्व विरासत में प्राप्त नहीं होगा, उसमें राजत्व के गुण और विशेषताएँ नहीं होंगी। इस प्रकार बलवन ने ईश्वर, शासक तथा जनता के बीच त्रिपक्षीय संबंध को राज्य का आधार बनाने का प्रयत्न किया।

Continue ....